

अहमदनगर का किला

उद्देश्य— भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता,
प्राचीनतम ग्रंथों, धर्मों व उनकी
शिक्षाओं को समझाने में समर्थता।

अहमदनगर में नेहरू जी की नौवीं जेलयात्रा थी। उन्हें यहाँ आए बीस महीने से भी अधिक समय हो चुका था। जब वह यहाँ पहुँचे तो शुक्ल-पक्ष शुरू हो चुका था। तब से हर बार जब नया चाँद उगता है तो जैसे उन्हें याद दिला जाता है कि कारावास का एक महीना और बीत गया। चाँद उनके बंदी जीवन का स्थायी सहचर रहा है। वही इस बात की याद भी दिलाता है कि अँधेरे के बाद उजाला होता है।



अतीत का भार

दूसरी जेलों की तरह, यहाँ अहमदनगर के किले में भी मैंने बागवानी करना शुरू कर दिया। वह रोज़ कई घंटे, तपती धूप में भी फूलों के लिए क्यारियाँ बनाने में बिताने लगा। मिट्टी बहुत खराब थी। पथरीली और पुराने मलबे और अवशेषों से भरी हुई।

यहाँ का इतिहास की कोई विशेष अहमियत नहीं है। पर इससे जुड़ी एक घटना, आज भी याद की जाती है। यह घटना है

चाँद बीबी नाम की एक सुंदर महिला के साहस की कहानी, जिसने इस किले की रक्षा के लिए अकबर की शाही सेना के विरुद्ध हाथ में तलवार उठाकर अपनी सेना का नेतृत्व किया। पर अंत में उसकी हत्या उसके अपने ही एक आदमी के हाथों हुई।

खुदाई के दौरान नेहरूजी को ज़मीन की सतह के बहुत नीचे दबे हुए प्राचीन दीवारों के हिस्से और कुछ गुंबदों और इमारतों के ऊपरी हिस्से मिले। वह खुदाई के लिए बहुत दूर नहीं जा सके क्योंकि न तो अधिकारियों से इसकी मंजूरी मिली और न ही उनके पास इस काम को करने के साधन थे। अब उन्होंने कुदाल छोड़कर हाथ में कलम उठा ली है। पर उन्होंने कहा वह न ही पैगंबर की भूमिका निभाकर भविष्य के बारे में लिख सकते हैं न अतीत के बारे में भी किसी इतिहासकार या विद्वान की तरह विद्वत्तापूर्ण शैली में नहीं लिख सकते हैं। वह पहले की ही तरह, अपने आज के विचारों और क्रियाकलापों के साथ संबंध स्थापित करके ही उसके बारे में कुछ लिख सकते हैं। गेटे ने एक बार कहा था कि इस तरह का इतिहास लेखन अतीत के भारी बोझ से एक सीमा तक राहत दिलाता है।

